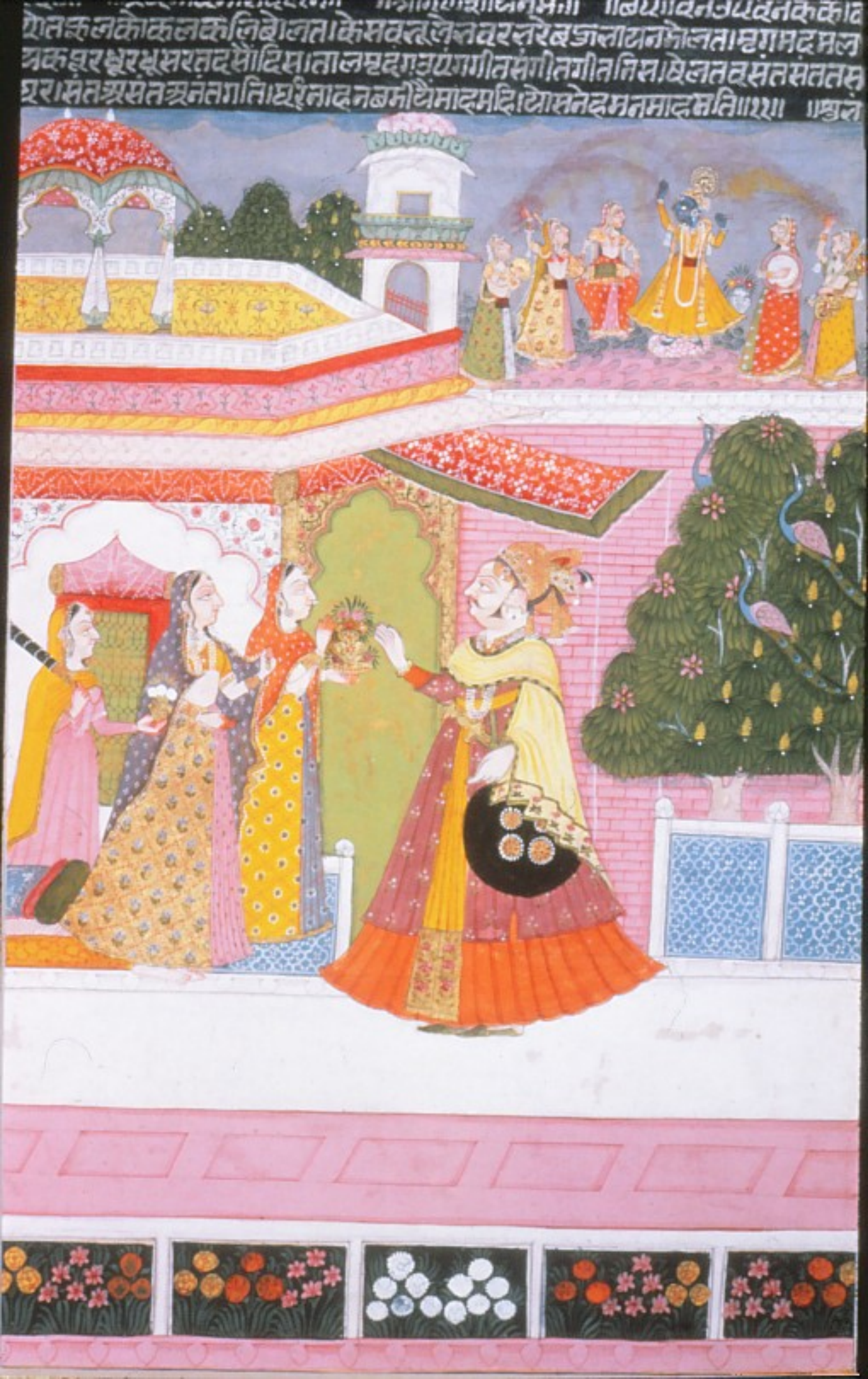

नी॥ कीन्हि तहांरावनरजधानी॥ जिहिंजसजोगबांटिगृहदीने॥ सुखीसकलरजनीच
रकीन्हे॥ एकबारकुबेरपरधावा॥ पुष्पकजानजीतिलेआवा॥ दोहा॥ कौतुकहीको

लासपुनिलीन्हिसुजाइउगाइ॥ मनहुँतोलिनिजबाहुबलचलाबहुतसुखपाइ॥ चौप
ई॥ सुखसंपतिसुतसेनसहाई॥ जयप्रतापबलबुद्धिबडाई॥ नितनूतनसबबाढतजा

जुतकछुककालचलिगाई ॥ जिहिंप्रभुप्रगटसोअवसरआई ॥ दोहा ॥ जोगलग्नग्र
हवारतिथिसकलभाअनुकूल ॥ चरअरअचरहर्षजुतरामजनमसुषमूल ॥ चौ

पई ॥ नौमीतिथिमधुमासपुनीता ॥ शुक्लपक्षअभिजितहरिप्रीता ॥ मध्यदिवसअति
सीतनघांमा ॥ पांवनकाललोकबिश्रामा ॥ सीतलमंदसुरभिबहबाहू ॥ हर्षितसुर

लसमर्पिकैंप्रभुनिजआश्रमआनि॥ कंदमूलफलभोजनहिंलिाभक्तहितजां
नि॥चौपई॥प्रातकहामुनिसनरघुराई॥निर्भयजज्ञकरउतुमजाई॥होमकरन
लागेमुनिझारी॥ आपरहेमषकीरषवारी॥ सुनिमारीचनिसाचरक्रोही॥ लैसहा

यधावामुनिद्रोही॥बिनफरबांनरामतेहिंमारा॥सतजोजनगासागरपारा॥पा
वकसरसुबाहुपुनिमारा॥ अनुजनिसाचरकटकुसँहारा॥ मारिअसुरद्विजनि
र्भयकारी॥ अस्तुतिकरहिंदेवमुनिझारी॥ तहँपुनिकछुकदिवसरघुराया॥ रहेक

सषीसुंदरचतुरगावहिंमंगलचार॥ गवनीबालमरालगतिसुषमाअंगअपार॥ चौ
पई॥ सषिनमध्यसियसोहतकैसी॥ छबिगनमध्यमहाछबिजैसी॥ करसरोजजय

मालसुहाई॥ बिस्वबिजयसोभाजिहिंपाई॥ तनसकोचमनपेमउछाहू॥ गूढपेमल
षिपरैनकाहू॥ जायसमीपरामछबिदेषी॥ रहिगैकुंवरिचित्रअवरेषी॥ चतुरसषी

तसुबासिनसादरलाई॥ जनकबामदिसिसोहसुनैना॥ हिमगिरिसंगबनाजनुमें

नां॥ कनककलसकलकोपरहरे॥ सुचिसुगंधमंगलजलपूरे॥ निजकरमुदितराव

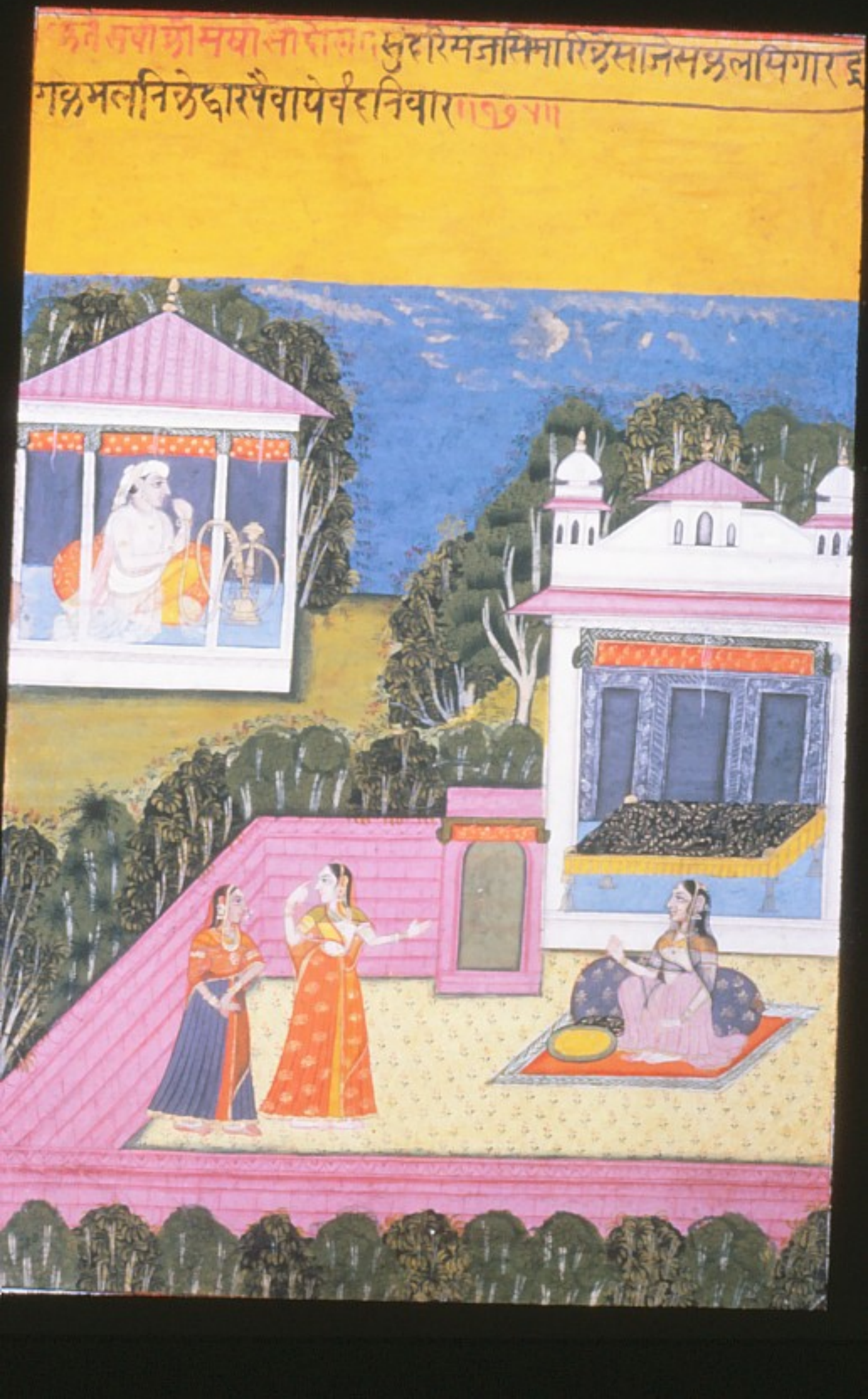

तसुवासिनसादरलाई॥जनकवामदिसिसोहसुनैना॥हिमगिरिसंगबनीजनुमैं

नां॥कनककलसकलकोपररूरे॥सुचिसुगंधमंगलजलपूरे॥निजकरमुदितराव

सारसहंसचकोर॥ चौपई॥ रामबियोगबिकलसबठाढे॥ जहँतहँमनहुँचित्रलिषिकाढे
नगरसकलबनगहबरभारी॥ षगमृगबिपुलसकलनरनारी॥ बिधिकैकेइकिरातिनकी

न्ही॥ जिहिंदवदुसहदसहुँदिसिदीन्ही॥ सहिनसकेरघुबरबिरहागी॥ चलेलोगसबब्या
कुलभागी॥ सबहिंबिचारकीन्हमनमाहीं॥ रामलषनसियबिनसुषनाहीं॥ जहँराम

उरगसकलसोसमनसंसृतिजासुकीरतियावनी ॥ दोहा ॥ अबिरलभगतिमांगिबरगीधग
यउहरिधाम ॥ तेहिकिक्रियायथोचितनिजकरकीन्हीराम ॥ चौपई ॥ कोमलचितअतिदी
नदयाला ॥ कारनबिनुरघुनाथकृपाला ॥ गीधअधमषगआमिषभोगी ॥ गतिदीन्हीजे

हिंजाचतजोगी ।
सुनहुउमातेलो
गअभागी ॥ हरि
तजिहोंहिंबिषय
अनुरागी ॥ पुनि
सीतहिंषोजतद्वौ
भाई ॥ चलेबिलो
कतबनबहुताई
संकुललताबिट
पघनकानन ॥ बहु
षगमृगतहँगजपं
चानन ॥ आवतपंथकबंधनिपाता ॥ तेहिंसबकहीश्रापकैबाता ॥ एकसमयप्रभुरिषिदुर्बासा

प्रभुलछमनपहँबहुरिपठाई॥लछमनकहातोहिसोबरई॥जोतृनतोरिलाजपरि
हरिई॥तबखिसियानरामपहँगई॥रूपभयंकरप्रगटतभई॥बिथुरेकेसदसनबि
कराला॥भृकुटीकुटिलकरनलगिगाला॥सीतहिँसभयदेषिरघुराई॥कहाअनु

जसनसयनबुझाई॥अनुजराममनकीगतिजांनी॥उगिरिसायतबसुनऊँभवानी॥
॥दोहा॥लछमनअतिलाघवसोनांककांनबिनुकीन्ह॥ताकेकररावनकहँमनऊँ
चिनौतीदीन्ह॥चौपई॥नांककांनबिनुभइबिकरारा॥जनुश्रवशैलगेरुकीधारा॥

नी॥ कीन्हि तहां रावन रजधानी॥ जिहिं जस जोग बांटि ग्रिह दीने॥ सुषी सकल रजनीच
र कीन्हे॥ एक बार कुबेर पर धावा॥ पुष्पक जान जीति लै आवा॥ दोहा॥ कौतुक ही कै

लास पुनि लीन्हिसि जाइ उठाइ॥ मनहुँ तौलि निज बाहुबल चला बहुत सुष पाइ॥ चौप
ई॥ सुष संपति सुत सेन सहाई॥ जय प्रताप बल बुद्धि बडाई॥ नित नूतन सब बाढत जा

आ० १८

असुरकहुँदीनबंधुरघुनाथ॥चौपई॥षलबधितुरतफिरेरघुबीरा॥सोहचापकरकटितू
नीरा॥आरतगिरासुनीतबसीता॥कहलछिमनसनपरमसभीता॥जाहुबेगिसंकट
अतिभ्राता॥लछिमनबिहसिकहासुनुमाता॥भृकुटीबिलाससृष्टिलयहोई॥सपनेहुँ

संकटपरैकिसोई॥सौंपिगामोहिरघुपतिथाती॥जोतजिजाउँतोपनहिंछाती॥यह
जियजानिसुनहुँममभ्राता॥पूछततेकहबकवनमेंमाता॥मरमबचनजबसीताबोला
हरिप्रेरितलछमनमनडोला॥चहुँदिसिरेषषचाइअहीसा॥बारंबारनाइपदसीसा॥ब

बहुबिधिकरतबिलापनमलियेंजातनरसुसीस॥डरतनषस्लबरपाइनलजोरीक्रि
अजनईस॥चौपई॥गीधराजसुनिआरतबानी॥रघुकुलतिलकनारिपहिचानी॥अ
धमनिसाचरलीन्हेंजाई॥जिमिमलेछबसिकपिलागाई॥अहहपथममतनुब

लनांही॥भदपिजाइदेषौंबलताही॥सीतापुत्रिकरसिजनित्रासा॥करिहौंजातुधां
नकरनांसा॥धावाक्रोधवंतषगकैसें॥छूटैपविपरबतकऊँजैसें॥रेरेदुष्टठाढकिन

रमैंदोउभाई॥प्रीतिरहीकछुबरनिनजाई॥मयसुतमायावीतेहिनांउं॥सोप्रभ्रा
वाप्रभुहमरेगांउं॥अर्द्धरात्रिपुरद्वारपुकारा॥बालिरिपूबलसहैनपारा॥धा

वाबालिदेषिसोभागा
मैंपुनिगएउंबंधुसंगला
गा॥गिरिबरगुहापैठि
सोजाई॥बालिमोहित
बकहेउबुझाई॥परेषे
सिमोहिएकपषवारा
नहिंआवौंतबजानेसु
मारा॥मासदिवसतहँ
रहेउषरारी॥निसरीरू
धिरधारतहंभारी॥त
बमैंमनहीकीन्हबिचा
रा॥चितराजजोनिबंधुतेहिमारा॥बालिहतेसिमोहिमारहिआई॥सिलादेइतहँ
चलेउपराई॥मंत्रिनपुरदेषाबिनुसांईं॥दीन्हेउमोहिराजबरिआईं॥ताहिमा

न्हि जाइ कही तेहिं बाता॥ आजु सुरन मोहि दीन्ह अहारा॥ सुनत बचन कह पवनकुमारा॥
राम काज करि फिरि मैं आवउँ॥ सीता कै सुधि प्रभुहि सुनावउँ॥ तब तव बदन पैठिहौं आ

ई॥ सत्य कहौं
मोहि जांनि
दे माई॥ कव
नहुँ जतन दे
इ नहिं जाना
ग्रससि न मो
हि कहेउ हनु
माना॥ जोज
न भरि तेहिं ब
दन पसारा॥
कपि तनु की
न्ह दुगुन बिस्तारा॥ सोरह जोजन मुष तेहिं ठाउ॥ तुरत पवनसुत बत्तिस भाउ॥ जस जस सुर
सा बदन बढावा॥ तासु दून कपि रूप दिषावा॥ सत जोजन तेहिं आनन कीन्हा॥ अति ल

मनकीन्हप्रनामा॥ बैठेहिंबीतजातनिसिजामा॥ कृसतनुसीसजटाइकबेनी॥ जपतहृदयर
घुपतिगुणश्रेणी॥ दोहा॥ निजपदकमलदिशमनरामकमलपदलीन॥ परमदुषीभापव

नसुतदेषिजानकीदीन॥ चौपई॥ तरुपल्लवमेंरहालुकाई॥ करैबिचारकरौंकाभाई॥ तेहिअ
वसररावनतहँआवा॥ संगनारिबहुकियेबनावा॥ बहुबिधिषलसीतहिंसमुझावा॥ सा

धरतसहसानन॥ अंडकोससमेतगिरिकानन॥ धरैजोबिबिधिदेहसुरत्राता॥ तुमसेसठ

नसिषावनदाता॥ हरकोदंडकठिनजेहिंभंजा॥ तेहिसमेतनृपदलमदगंजा॥ षरदूषणत्रि

लागि अकास ॥ चौपई ॥ देह बिसाल परम हरुआई ॥ मंदिर तें मंदिर चढ़ि धाई ॥ जरै नगर

भालोग बिहाला ॥ झपटि लपटि झकोटि कराला ॥ तात मातु हा सुनि पुकारा ॥ कहिं

समामत्तात्रास॥१॥पवनतनयकेबचनसुनिबिहसेरामसुजान॥दछ्छिनदिसाबिलोकिप्रभु
बोलेकृपानिधान॥चौपई॥देषुबिभीषनदछ्छिनआसा॥घनघमंडदामिनीबिलासा

मधुरमधुरगरजैघनघोरा॥होइब्रिष्टिजनुउपलकठोरा॥कहतबिभीषनसुनहुकृपाला

लकभुजासोइकाटी॥धावाबांमबाहुगिरिधारी॥प्रभुसोइभुजाकाटिमहिपारी॥काटेंभु

जासोहखलकैसा॥पक्षहीनमंदिरगिरिजैसा॥उग्रबिलोकनिप्रभुहिंबिलोका॥ग्रसनच

सोसमरामहे ॥३॥ जेचरनसिवअजपुजरजसुभपरसिमुनिपतनीतरी ॥ नषनिर्गतामु
निबंदितांत्रिलोक्पावनसुरसरी ॥ ध्वजकुलिसअंकुसकंजजुतबनफिरतकंटककिनल
हे ॥ पदकंजद्वंदमुकुंदरामरमेसनित्यभजामहे ॥४॥ अव्यक्तमूलमनादितरुतुचचारिनि

गमागमभने ॥
षटस्कंधसाषा
पंचबीसअनेक
पर्नसुमनघने ॥
फलजुगलष
गदैमधुरबेलि
अकेलिजेहि
आश्रितरहे ॥ प
ल्लवतफूलतन
वलनितसंसार
बिटपनमामहे ॥५॥ जेब्रह्मअजमद्वैतमनुभवगम्यमनपरध्यावही ॥ तेकहहुजानहुनाथहम
तवसगुनजसनितगावही ॥ करुनायतनप्रभुसद्गुनाकरदेवयहबरमागही ॥ मनबचन
कर्मबिकारतजितवचरनहमअनुरागही ॥ दोहा ॥ सबकेदेषतबेदन्हबिनतीकीन्हउदार